तृतीय अध्याय

MAHA. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

* तृतीय अध्याय *

''विवेच्य उपन्यासों में संघर्ष - चेतना''

3.1 प्रास्ताविक -

अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में प्राप्त संघर्ष - चेतना का विवेचन - विश्लेषण करने से पूर्व हमें यह जानना आवश्यक है कि 'संघर्ष' शब्द का क्या अर्थ है ? संघर्ष का स्वरुप और परिभाषा क्या है ? विभिन्न क्षेत्रों में 'चेतना' का स्वरुप कैसा है ? इसके साथ - साथ संघर्ष - चेतना का स्वरुप और परिभाषा क्या है ? यहाँ इसका ब्यौरेवार विवेचन प्रस्तुत है -

3.2 'संघर्ष' शब्द का अर्थ -

अलग - अलग शब्द कोशों में संघर्ष शब्द का अर्थ इस तरह दिया गया है - 'मानक हिंदी कोश' में संघर्ष शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है - ''संघर्ष - पुं.(सं) 1. दो विरोधी दलों या पक्षों में एक-दूसरे को दबाने के लिए होनेवाला कोई ऐसा प्रयत्न जिसमें दोनों अपनी सारी शक्ति लगा देते हैं और यथा-साध्य एक-दूसरे का उपकार या हानि करने पर तुले रहते हैं। 2. उक्त के आधार पर कठिनाइयों, बाधाओं आदि से बचने तथा प्रबंध विरोधी शक्तियों को दबाने के लिए प्राणपन से की जानेवाली चेष्टा या प्रयत्न। 3. आधुनिक पाश्चात्य साहित्यकारों के मत से नाटक में वह स्थिति जिसमें दो परस्पर विरोधी शक्तियाँ एक-दूसरे को दबाने को प्रयत्न करती हैं। 4. वह अहंकार पूर्ण बातें जो अपने प्रतिपक्षी को अपना बड़प्पन जतलाने के लिए कही जाए। 5. स्पर्धा, होड़। 6. द्वेष। वैर।''[1]

'हिंदी शब्द सागर' के दसवे भाग में संघर्ष शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है - ''संज्ञा पु.(स.सङ्.घर्ष)। 1. दो विरोधी व्यक्तियों या दलों आदि में स्वार्थ के विरोध के कारण होनेवाली प्रतियोगिता या स्पर्धा। 2. वह अहंकार सूचक वाक्य जो अपने प्रतिपक्षी के सामने अपना बड़प्पन जतलाने के लिए कहा जाए। 3. असूया। ईर्ष्या। 4. शत्रुता। 5. शर्त लगाना। बाजी लगाना।''[2] 'समांतर कोश हिंदी थिसारस' में संघर्ष शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है -

---

1. सं. रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी कोश, पाँचवाँ खण्ड, पृष्ठ - 214
2. सं. श्यामसुंदर दास - हिंदी शब्दसागर, दसवाँ भाग, पृष्ठ - 4851

''प्रतियोगिता - 1. अहंपूर्विका, प्रतिस्पर्धा, मुकाबला, शर्त, संघर्ष, सामना, स्पर्धा, होड़, होड़ा-होड़ी। 2. प्रतिरोध - अपलायन, आक्रमण रोध, टकराव, टक्कर, विरोध संघर्ष। 3. संघर्ष - सं. संघर्ष - कशमकश, द्वंद्व, घर्षण, जद्दो जध्द।''[1]

'राजस्थानी शब्द कोश' में संघर्ष शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है - ''1. रगड़ने, घिसने या घोटने की क्रिया । 2. किन्हीं दो विरोधी दलों या पक्षों में एक-दूसरे को दबाने के लिए चलनेवाला झगड़ा । 3. किसी अभाव या कष्ट से बचने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न।''[2] 'राजपाल हिंदी शब्दकोश' में संघर्ष शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है - ''1. चेष्टा, प्रयत्न जैसे (जीवन संघर्ष), 2. टकराव, स्ट्रगल (दो दलों में संघर्ष) । 3. कठिन परिस्थितियों का सामना ।''[3] संघर्ष शब्द के उक्त अर्थों के आधार पर मेरी विनम्र धारणा है कि संघर्ष याने कठिन परिस्थितियों का सामना करना है । इसमें किन्हीं दो व्यक्ति, समाज, अथवा दलों के बीच एक-दूसरे के विरूद्ध न्याय प्राप्ति के लिए या अपने स्वार्थ को सिद्ध करने हेतु झगड़ा हुआ करता है। संक्षेप में संघर्ष से यही तात्पर्य है।

3.3 संघर्ष की परिभाषा -

संघर्ष की परिभाषा विभिन्न विद्वानों द्वारा विभिन्न प्रकार से दी हुई मिलती है। जैसे - 'इंटरनेशनल एनसायक्लोपिडियाँ ऑफ सोशियल सायन्सेस' में संघर्ष की परिभाषा इस प्रकार दी है - ''Conflict may be defined as a struggle over values or claims to status, power & scarce resources, in which the aims of the conflicting parties are not only to gain the desired values but also to neutralize, injure, or eliminate their values.''[4] (संघर्ष वह है जो मूल्योंपर आधारित होता है। तथा जिसमें व्यक्ति का ध्येय इच्छित मूल्यों को प्राप्त करना न होकर प्रतिस्पर्धि का नाश करना तथा चोट पहुँचाना होता है और वह सत्ता तथा अधिकार स्थापित करता है।)

रिचर्ड और विन्डे ने संघर्ष को इस प्रकार परिभाषित किया है - ''Conflict is the process in which the parties struggle against one another for a

---

1. अरविंद कुमार - समांतर कोश हिंदी थिसारस, पृष्ठ - 1617
2. सं.डॉ. सीताराम लालस - राजस्थानी शब्दकोश, चतुर्थ खण्ड, पृष्ठ - 5141
3. डॉ. हरदेव बाहरी - राजपाल हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ - 787
4. David L. Sills - Internal Encyclopedia of the Social Sciences - Vol. 3

commonly prized object wars; feuds & fights are examples of conflict.''[1] (संघर्ष वह प्रक्रिया है जो एक ही उद्दिष्ट के लिए दो पक्षों के लोग आपस में लड़ते हैं।)

हर्टन और हण्ट ने संघर्ष की परिभाषा इस प्रकार दी है - ''Conflict may be defined as the process of seeking to obtain rewards by eliminating or weakening the competitors.''[2] (संघर्ष एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें प्रतिस्पर्धियों को ध्वस्त करके अपना अधिकार स्थापित किया जाता है।) कार्ल मार्क्स के मतानुसार ''संघर्ष से अभिप्राय जनजीवन में व्याप्त बहुरुपी शोषण एवं उस शोषण के खिलाफ उठती आवाजों से है।''[3]

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर मेरे विचार से संघर्ष से तात्पर्य अन्याय अत्याचारों के विरूद्ध लड़ने से और समाज के किसी भी आदमी के जीवित रहने से हैं। कहना सही है कि जीवन में अनेक अन्याय-अत्याचारों, संकटों एवं कठिनाइयों का सामना करना और जीवित रहना ही संघर्ष है।

3.4 संघर्ष का स्वरुप -

मानव समाज में संघर्ष सार्वकालिक और सार्वभौमिक रहा है, पर प्रत्येक देश और समाज में इसके स्वरुप में कुछ भिन्नता रही है। संघर्ष के स्वरुप का विवेचन करते हुए डॉ. रमेश जाधव लिखते हैं - ''संघर्ष कौटुंबिक, आर्थिक, धार्मिक, राजकीय, वांशिक, जातीय आदि रूपों में दृष्टिगोचर होता है।''[4] संघर्ष कोई दैवी आपदा नहीं, अपितु समाज की त्रसित आवाज है जो प्रस्तुत उद्धरण में दिखाई देती है। शोषित निम्नवर्ग के संघर्ष को ही शोषित वर्ग की प्रगति मानते हुए केशवदेव शर्मा कहते हैं - ''जितना ही अधिक वर्ग संघर्ष होगा उतनाही पुराने मूल्यों के बीच नए मूल्यों स्थापित होंगे और इस प्रकार समाज की व्यवस्था में परिवर्तन आएगा।''[5] भारतीय समाज में व्याप्त संघर्ष अतीत काल से चला आ रहा है। लेकिन आजकल संघर्ष का और भी भयंकर विकराल रूप दृष्टिगोचर होता है। अतीत में संघर्ष इतना व्यापक नहीं था। आज व्यक्ति-व्यक्ति के बीच संघर्ष की भावना स्वामित्व स्थापित कर चुकी है। यही हाल व्यक्ति और समाज तथा व्यक्ति और राष्ट्र के बीच हो रहा है।

---

1. Richard C. Wallace - Sociology, Page - 96
2. Horton & Hunt - Sociology, Page - 296
3. डॉ. केशवदेव शर्मा - आधुनिक हिंदी उपन्यास और वर्ग संघर्ष, पृष्ठ - 7
4. डॉ. रमेश जाधव - समाजशास्त्र, पृष्ठ - 175
५. डॉ. केशवदेव शर्मा - आधुनिक हिंदी उपन्यास और वर्ग संघर्ष, पृष्ठ - 2

3.5 'चेतना' शब्द का अर्थ -

चेतना शब्द का प्रयोग साहित्य, दर्शन और मनोविज्ञान में भी मिलता है। विज्ञानवादी और प्रत्ययवादी दार्शनिक चेतना या विज्ञान को शाश्वत और एकमात्र सत्ता मानते हैं। इस अर्थ में चेतना शब्द आत्मा का समानार्थक बन जाता है। परंतु साहित्य और दर्शन में इस अर्थ के लिए प्राय: चैतन्य शब्द का प्रयोग किया जाता है। चेतना शब्द का अधिक प्रयोग मनोविज्ञान के क्षेत्र में किया जाता है। भिन्न-भिन्न शब्द कोशों में चेतना शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है -

'समांतर कोश हिन्दी थिसारस' में चेतना शब्द के अर्थ इस प्रकार दिए हैं - ''1. अनुभूति - एहसास, चेतना। 2. आंतरिक ज्ञान - अनुपदिष्ट ज्ञान, चेतना। 3. इड़ - अंत: प्रेरणा, आदिम चेतना। 4. चेतना लाभ होना - होश आना, चेतना आना। 5. जागना - उठना। 6. शारीरिक बल - ओज, चेतना, अंतस्सार। 7. स्फूर्ति - उत्साह। चेतनता, जान, जिंदादिली।''[1]
'संक्षिप्त हिंदी शब्द सागर' में चेतना शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है - ''चेतना - सं.(स्त्री) चैतन्य। होश। ज्ञान। बुद्धि। समझ ज्ञानात्मक मनोवृत्ति। 3. स्मृति। याद। 4. जीवन क्रि.अ (हिं.चेत) संज्ञा में होना। होश में आना। 2. सावधान होना। चौकस होना। क्रि.स. विचारना। समझना।''[2]

'हिंदी विश्वकोश' में चेतना का अर्थ इस प्रकार दिया है - ''चेतना - (सं.स्त्री) चित्-युच-टाप। 1. बुद्धि। 2. मन की एक वृत्ति। 3. चैतन्य, चेतनता। 4. चित्तवृत्ति विशेष स्वरुप ज्ञानव्यंजक प्रमाण का असाधारण कारण। 5. स्मृति याद, सुधि। चेतना - हि.क्रि.- 1. सावधान होना, चौकन्ना होना। होश में आना। 3. विचारना, सोचना, समझना, ध्यान देना।''[3] 'मानक हिन्दी कोश' के दूसरे खण्ड में चेतना शब्द के अर्थ पर इस प्रकार प्रकाश डाला गया है - ''चेतना - स्त्री (सं. चित् + युच - अन् - टाप) 1. मन की वह वृत्ति या शक्ति जिससे जीव या प्राणी को आन्तरिक तत्वों या बातों का अनुभव या भान होता है। होश-हवास। 2. बुद्धि, समझ। 3. मनोवृत्ति 4. याद, स्मृति। अ (हि. चेत) 1. संज्ञा से युक्त होना। होश में आना। उदा - नैन पसारि चेत धन चेती। जायसी। 2. ऐसी स्थिति में होना कि बूरे परिणामों या बातों से बचकर अच्छी बातों की ओर ध्यान देना। सं. विचारना। समझना। जैसे - किसी बात का भला या बुरा सोचना।''[4]

---

1. अरविंद कुमार - समांतर कोश हिंदी थिसारस, पृष्ठ - 969
2. सं.रामचंद्र वर्मा - संक्षिप्त हिंदी शब्दसागर, पृष्ठ - 322
3. सं. नगेंद्रनाथ बसु - हिंदी विश्वकोश, सप्तम भाग, पृष्ठ - 488
4. सं. रामचंद्र वर्मा - मानक हिंदी कोश, दूसरा खण्ड, पृष्ठ - 274

'आधुनिक हिंदी शब्दकोश' में - चेतना का अर्थ अत्यन्त सरल एवं स्पष्ट शब्दों में दिया है। जैसे - ''चेतना - स्त्री. सं. मन की वह वृत्ति जो जीव को अंतर एवं बाह्य का ज्ञान कराती है, वह स्थिति जो प्राणी के चेतन होने का प्रमाण देती है। संज्ञा, ज्ञान, प्रतिबोध, सजीवता, बुद्धिमत्ता, तर्कनाशक्ति, चेतस।''[1] वस्तुत: चेतना शब्द अपने आप में बड़ा ही व्यापक अर्थ रखता है। 'नालंदा विशाल शब्दसागर' में चेतना शब्द का अर्थ दिया गया है - ''बुद्धि, मनोवृत्ति, ज्ञानात्मक मनोवृत्ति, स्मृति, सधि, चेतनता, होश।''[2]

'चेतना' अंग्रेजी शब्द Conscious-ness का हिंदी पर्याय है। 'ऑक्सफर्ड डिक्शनरी' में चेतना शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया है - ''Con-scious-awake, aware, knowing things, because one is using the bodily senses & mental powers.

Conscious-ness-All the ideas thoughts, feeling, wishes, intentions, recollections of a person or persons."[3]

चेतना शब्द के उपर्युक्त अर्थ को ध्यान में रखते हुए 'चेतना' का अर्थ इस प्रकार लिया जा सकता है - चेतना बुद्धि या मन की वह विशेष वृत्ति है जिसके कारण मनुष्य या प्राणी को अनुभूतियों, भावों, विचारों, बाह्य घटनाओं आदि का अनुभव या भान होता है। सोच-समझकर किसी बात की ओर ध्यान देने को चेतना कहा जाता है।

3.5.1 चेतना शब्द की परिभाषा :-

डॉ. अंबलगे के मतानुसार - ''चेतना प्राणी मात्र में निहित वह शक्ति है जो उन्हें निर्जीव और जड़ वस्तुओं से अलग बनाती है और उन्हें चैतन्यमय बनाकर सजीव सिद्ध करती है।''[4] कई विद्वानों के मतानुसार चेतना की परिभाषा नहीं की जा सकती। 'इनसायक्लोपीडिया ब्रिटैनिका' में लिखा है - ''Knowing things together is conscious.''[5] (वस्तुओं को समग्रता से परखने को ही 'चेतना' कहा गया है।)

---

1. सं. डॉ. गोविंद चातक - आधुनिक हिंदी शब्दकोश, पृष्ठ - 211
2. सं. नवलजी - नालंदा विशाल शब्दसागर, पृष्ठ - 388
3. A.S.Hornby - Oxford Dictionary, Page - 180
4. डॉ. काशिनाथ अंबलगे - संतों और शिवशरणों के काव्यों में सामाजिक चेतना, पृष्ठ - 17
5. Encyclopedia of Britannica. Volume-III, Page - 369

3.5.2 चेतना का स्वरूप :-

भिन्न - भिन्न क्षेत्रों में चेतना का स्वरूप अलग - अलग दृष्टिगोचर होता है। डॉ. कुसुम चतुर्वेदी के मतानुसार - ''चेतना मनुष्य को सदैव प्रभावित और उद्वेलित करती रही है। जो कुछ नहीं है उसे पाने की चेतना और जो कुछ है उसे बचाने की चेतना।''[1] चेतना का यही सापेक्ष रूप या गुण है। दर्शन तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र में 'चेतना' का स्वरूप अलग-अलग परिलक्षित होता है, जैसे - सामाजिक चेतना, धार्मिक चेतना, राजनीतिक चेतना, आर्थिक चेतना, मानसिक चेतना, व्यक्तिगत चेतना आदि।

3.5.2.1 दर्शन के क्षेत्र में चेतना का स्वरूप :-

मानव चेतना की तीन विशेषताएँ हैं, वे हैं ज्ञानात्मक, क्रियात्मक और भावात्मक। भारतीय दार्शनिकों ने इसे सच्चिदानंद रूप कहा है। चेतना वह तत्व है जिसमें ज्ञान और भाव की अनुभूति व्यक्ति को होती है अर्थात क्रियाशीलता की अनुभूति होती है। उसके प्रति प्रिय अथवा अप्रिय भाव पैदा होता है और उसके प्रति इच्छा पैदा होती है, जिसके कारण या तो हम उसे अपने समीप लाते हैं या दूर हटाते हैं। इस प्रकार दर्शन के क्षेत्र में चेतना का स्वरूप दिखाई देता है।

3.5.2.2 मनोविज्ञान के क्षेत्र में चेतना का स्वरूप :-

मनोवैज्ञानिकों की दृष्टि से 'चेतना वह तत्व है जिसके कारण मनुष्य को सभी प्रकार की अनुभूतियाँ होती हैं। चेतना के कारण ही मनुष्य देखता है, सुनता है, समझता है और उनके विषयों पर चिंतन करता है। इसी कारण मनुष्य को सुख-दुःख की अनुभूतियाँ होती है। चेतना के कारण मनुष्य को आंतरिक और बाह्य परिस्थितियों का ज्ञान होता है। चेतना के दमन से मनुष्य का व्यक्तित्व खंड़ित हो जाता है।

3.6 संघर्ष - चेतना की परिभाषा -

संघर्ष चेतना से अभिप्राय है शोषण तथा अन्याय, अत्याचार एवं अपने अस्तित्व

---

1. सं. कुसुम चतुर्वेदी - 'नया मानदण्ड' त्रैमासिक, पृष्ठ - 1, अक्तूबर-दिसंबर, 1999

तथा अधिकारों को सुरक्षित रखने के लिए शोषितों द्वारा शोषकों के विरूद्ध उठायी गयी आवाज से है। वह आवाज संघर्ष करने के लिए चेतित तथा प्रोत्साहित करती है।

3.6.1 संघर्ष - चेतना का स्वरूप :-

संघर्ष - चेतन का स्वरूप बहुतही व्यापक एवं विस्तृत है। समाज के विभिन्न वर्गों में इसका स्वरूप अलग - अलग परिलक्षित होता है। मजदूर, किसान, युवक, नारी आदि में संघर्ष चेतना का स्वरूप भिन्न-भिन्न है। समाज में निम्नवर्ग के कुछ लोग तथा अन्य लोग शोषकों के खिलाफ आवाज उठाकर अपने अस्तित्व तथा अधिकारों की माँग करते है। समाज के उच्चवर्गीय लोगों द्वारा गरीबों का शोषण होता है। यह शोषण आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक, सांप्रदायिक आदि स्तरों पर होता है। शोषण तथा अन्याय के विरूद्ध सर्वहारा वर्ग संगठित होकर संघर्ष करता है और अपने अस्तित्व तथा अधिकार को शोषकों से छीन लेता है। इससे स्पष्ट है कि संघर्ष-चेतना हमेशा परिवर्तन हेतु होती है। स्थापित व्यवस्था, स्थापित मान्यता या परंपरा को बदल देने की धारणा संघर्ष-चेतना में निहित होती है। संघर्ष-चेतना के कारण ही समाज का सर्वहारा एवं निम्नमध्य वर्ग जीवित रहा हुआ दृष्टिगोचर होता है।

3.7 विवेच्य उपन्यासों में प्राप्त संघर्ष-चेतना -

अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में समाज के विभिन्न वर्ग एवं घटकों में संघर्ष-चेतना परिलक्षित होती है। विवेच्य उपन्यासों में प्राप्त संघर्ष - चेतना का विवेचन - विश्लेषण यहाँ विस्तार से प्रस्तुत है -

3.7.1 मजदूरों में संघर्ष - चेतना :-

भारतवर्ष में प्राय: स्वतंत्रता के पश्चात विभिन्न वर्गों की दरार बढ़ती गई। समाज का निम्नवर्ग दूसरों को अपने श्रम बेचता रहा। सर्वहारा मजदूरों का शोषण हमारे ही समाज के उच्चवर्गीयों द्वारा चलता रहा। सर्वहारा श्रमिकों का शोषण तथा श्रम को चूसनेवालों में मालिक,

कारखानदार, आदि लोग प्रमुख रहे। अधिक से अधिक लाभ प्राप्त कर श्रमिकों को कम से कम पारिश्रमिक दिया जाता रहा। अत: मजदूर अपनी माँगों की पूर्ति के लिए मालिकों से निवेदन करते रहे। लेकिन मजदूरों की माँगे तथा अन्याय अत्याचार को निरंतर जारी रखने पर मजदूरों में संघर्ष-चेतना जाग उठी और वे शोषकों के खिलाफ संघर्ष करने लगे।

कवि छैल बिहारी कण्टक जी के शब्दों में दया की भीख माँगने के बदले मजदूर अपने दृढ़ आत्मविश्वास से कहता है -

"यों गुलाम होकर न सहूँगा अब मैं अत्याचार।
मैं जागृत मजदूर माँगता हूँ, अपने अधिकार।"[1]

प्रेमचंद की तरह कण्टकजी भी मजदूरों के पक्षधर थे। यहाँ हमें मजदूरों में संघर्ष - चेतना जाग उठी परिलक्षित होती है। देश के मजदूर किसानों तथा अन्य श्रमिकों को जागृत करते हुए कण्टक जी ने कहा है -

"देश के ओ मजदूर - किसान, बहुत दिन सोये लम्बी तान।
उठाये सदियों से अपमान, रहे नंगे-भूखे-अनजान।"[2]

अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' में प्रस्तुत संघर्ष का चित्रण अत्यधिक दृष्टिगोचर हुआ है। प्रस्तुत उपन्यास में मजदूरों का संघर्ष शोषक गिरस और कोठिवालों से हैं। बनारस तथा आसपास के सभी बुनकरों में अन्याय-अत्याचार के खिलाफ संघर्ष-चेतना जाग उठती है। अब्दुल बिस्मिल्लाह प्रगतिशील विचारधारा तथा मजदूरों के पक्षधर हैं। प्रस्तुत उपन्यास का नायक मतीन मजदूर बुनकरों का प्रतिनिधि है। बिस्मिल्लाह जी मतीन में भड़क उठी संघर्ष की ज्वाला को इस प्रकार अभिव्यक्त करते हैं - "आज वह काम शुरू नहीं करेगा। आज वह रथयात्रा जाकर बैंक में पता करेगा कि कैसे उसे लोन का रूपया मिल सकता है? और फिर अपना धन्धा वह अपने से करेगा। किसी हाजी-वाजी की गुलामी अब वह नहीं करेगा।"[3] काशी के हस्तशिल्पियों का अपना अलग समाज है। यह बुनकर समाज सदियों से हाजीसाहब जैसे गिरसों के यहाँ 'बानी' पर बिनकारी करते थे। उनसे कम मूल्य पर अधिक समय तक काम करवाया जाता था। साथ-साथ बुनी गयी साड़ियों में नायजाज कटौतियाँ होती थीं।

---

1. रामविलास शर्मा - भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद, खण्ड-दो, पृष्ठ - 429
2. वही, पृष्ठ - 429
3. अब्दुल बिस्मिल्लाह - झीनी झीनी बीनी चदरिया, पृष्ठ - 18

इसलिए मतीन में यह संघर्ष - चेतना जाग उठती है कि बैंक से लोन लेकर बुनकर समाज अपने-अपने करघे-कतान लेकर साड़ियाँ बिने और अच्छा जीवन जी सकें।

भारतीय जनता पार्टी के सदस्य श्री. बलराज मिश्र ने सरकार का ध्यान केंद्रित करते हुए कहा कि - ''पिछले मास में पाँच लाख बुनकरों ने हड़ताल की थी, जिसके कारण उनके सामने जीवन यापन की समस्या गंभीर हो गयी।''[1] वाराणसी, मुबारकपुर तथा आसपास के साड़े पाँच लाख मजदूर बुनकरों ने सरकार के खिलाफ संघर्ष छेड़ा था। इस संघर्ष का मुख्य कारण था रेशमी सिल्क के धागे में बहुत अधिक वृद्धि हो गयी थी। उसका प्रभाव उस क्षेत्र के साठ हजार हथकरघों पर पड़ा था। मजदूर बुनकर धागे में वृद्धि होने के कारण साड़ियाँ नहीं बना पा रहे थे। उन्होंने सरकार के खिलाफ आंदोलन किया लेकिन उनकी दशा और भी बदतर हो गयी।

अल्ताफ हाजी गिरस के यहाँ कोठी में काम करता था। उसने हाजी साहब से कुछ कर्जा लिया था। हाजी गिरस की कोठी में जाने में अल्ताफ को देर होनेवाली थी तब वे घर पर आकर टपक पड़े। अल्ताफ की बीवी उसे कहती है - ''नीचे गिरस खड़े हैं, उनही से पूछो।''[2] हाजी गिरस क्रोध में आकर कहने लगते हैं - ''साड़ियाँ बिनियों के नाँही ? आज तूँ सफा बता दो हम्में।''[3] गिरस का कथन सुनकर अल्ताफ के बदन में जैसे आग लग जाती है। वह सोचता है कर्जा लिया है तो क्या चुकाएंगे नहीं ? इनकी कोठी में रात दिन करघे पर जुते रहने से इन्हें चैन मिलेगा। अल्ताफ आगे कहने लगता है - ''हमारा जब मन होइए तब बिनेंगे। कर्जा खाये हैं मगर गुलामी नाँही लिखायें हैं। समझेव हाई साब।''[4] यहाँ हमें अल्ताफ में संघर्ष - चेतना परिलक्षित होती है।

मजदूर बुनकरों के निरंतर शोषण की खबर अल्ताफ मतीन से कहता है - ''देखो मतीन, अब एत्तर के काम नाई चलिए। अब कुछ करेके होईए। ... बस हमैं एतना मालूम है कि इ पार्टी तोरा साथ देइए। इ गिरस्ता लोगन के खिलाफ है । इ सेठ लोगन के खिलाफ है।''[5] मजदूर बुनकरों को अब कोठीवालों द्वारा एक महीने बाद भूनेवाला चेक दिया जाता था। इसलिए ज्यादातर लोग अपने चेक कम मूल्यों में दूसरों को दे देते थे। दाग - मत्ती, रफू तीरी की

---

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह - झीनी झीनी बीनी चदरिया, पृष्ठ - 116
2. वही, पृष्ठ - 120
3. वही, पृष्ठ - 120-121
4. वही, पृष्ठ - 121
5. वही, पृष्ठ - 148-149

विभिन्न कटौतियाँ तो परंपरा ही बन गयी थी। पावरलूमों की धूम मच जाने के कारण हाथकरघों पर बिननेवाले कारीगरों का महत्त्व कम हो रहा था। अत: अल्ताफ तथा सभी मजदूर बुनकरों में संघर्ष - चेतना प्रस्फुटित होती है।

प्रस्तुत उपन्यास का पात्र इकबाल नयी पीढ़ी का प्रतिनिधि है। वह अपने पिता मतीन की शोषण के खिलाफ लड़ी संघर्ष की मशाल को अपने हाथ में लेकर मजूदर बुनकरों को एकता निर्माण की माँग करता है। वह बुनकर मजदूरों को समझाता है कि अनेक बुनकर भाई अपने लड़कों को अनपढ़ रखकर तुरन्त उनके हाथ में साड़ी की पेटियाँ थमा दी जाती है और वे बेचारे भी कम मूल्य पर बेच डालते हैं। वह दुनिया में चली स्पर्धा, होड़ की बात उन्हें समझाता है पुश्तैनी धन्धे के साथ-साथ हमें तरक्की करती हुई दुनिया के साथ भी चलना होगा, '' तभी अपने हक के लिए लड़ने का जज्बा हमारे भीतर पैदा हो सकता है, वरना नहीं। अगर अभी से हम नहीं चेतते तो यह सरमायदाराना निजाम हमें खत्म करके दम लेगा। इसलिए आप हजरात से मेरी पुरजोर अपील है कि ... दुनिया के मजदूरों एक हो।''[1] ठीक इस कथन के अनुसार ही कण्टक जी ने मजदूरों में संघर्ष - चेतना जगायी है -

'' एक हो दुनिया के मजदूर ...
सिंहासन हिल उठें भयंकर संघर्षों में
सहमें पूँजीवाद, कँपे युग, हो दुख चकनाचूर
एक हो दुनिया के मजदूर।''[2]

3.7.2 युवाओं में संघर्ष-चेतना :-

देश की सबसे बड़ी शक्ति युवा शक्ति है। युवा शक्ति के बल पर ही देश का भविष्य सुरक्षित हो सकता है। लेकिन आज हमें कुछ बूढ़ों में युवा शक्ति और कुछ युवाओं में भी बुढ़ापा दिखाई देता है। विवेच्य उपन्यासों में भी युवाओं में संघर्ष-चेतना जाग उठी दृष्टिगोचर होती है। बोचास्वामी श्री अक्षर पुरूषोत्तम संस्था द्वारा आयोजित समारोह में डॉ. शंकरदयाल शर्मा ने युवा शक्ति के संदर्भ में कहा था कि '' मैं युवा शक्ति को एक ऐसी शक्ति मानता हूँ,

---

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह - झीनी झीनी बीनी चदरिया, पृष्ठ - 185
2. रामविलास शर्मा - भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद, खण्ड-दो, पृष्ठ - 429

जिसके हाथ में एक पत्थर का टुकड़ा होता है। वह इस पत्थर को तराशकर मूर्ति बना सकता है।''[1] उन्होंने 12 जनवरी, 1995 में भोपाल में आयोजित राष्ट्रीय युवा उत्सव का शुभारंभ करते हुए इस बात पर लक्ष्य केंद्रित किया कि ''यह जरुरी है कि हमारे युवा जीवन के क्षेत्र में जाएँ वहाँ संघर्ष करे और समाज के उत्थान में अपना योगदान करें।''[2]

विवेच्य उपन्यासों में चित्रित अनेक युवाओं में संघर्ष - चेतना पर्याप्त मात्रा में दृष्टिगोचर होती है। डॉ. शंकरदयाल शर्मा का उपर्युक्त कथन युवाओं में प्राप्त संघर्ष - चेतना की अत्यधिक पुष्टि करता है। अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' में युवा संघर्ष - चेतना प्रचुर मात्रा में मिलती है। लेखक मतीन का परिचय करते हुए कहते हैं - ''मतीन खासा पढ़ा लिखा नहीं है तो क्या हुआ, समझदार है। युवा है। तरक्की करने का जज्बा है उसमें। इसलिए वह निडर है।''[3] मतीन बहुत दिन तक 'बानी' पर ही बिनता रहता है। लेकिन गिरसों के अन्याय तथा शोषण से त्रस्त होकर वह संघर्ष के लिए चेतित हो उठता है। वह चाहता है कि छोटा-मोटा गिरस्ता बनूँ। कम से कम इतनी हैसियत तो हो ही जाय कि अपना रेशम धागा खरीदकर केवल अपनी मेहनत पर कमाये खाये। तब बड़े गिरस्तों की चापूलसी नहीं करनी पडेगी। इसलिए वह चेतित होकर एम्.एल्.ए. के पास जाकर को-ऑपरेटिव सोसायटी की पूछताछ करता है।

मतीन में संघर्ष - चेतना की ज्वाला भड़क उठी है। वह सोचता है - ''तीस बुनकर इकट्ठे करने होंगे ... लतीफ एक, अल्ताफ दो, बशीर तीन, रऊफ चाचा चार ... अगर तीस बुनकर इकट्ठे हो गए तो हाजी अमीरूल्ला को वह बता देगा कि धन्धा ऐसे होता है।''[4] दरअसल मतीन बेचैन अवस्था में है, वह चाहता है - ''सोसायटी बननी चाहिए, जैसी भी हो। गिरस्तों का गढ़ टूटना चाहिए, जैसे भी हो।''[5] मतीन चेतित होकर तीस बुनकरों को संगठित करता है और धनराशि पाने के लिए बैंक में जाता है। तब उसे हाजीसाहब द्वारा बनायी गयी फर्जी सोसायटी का पता चलता है। वह सोसायटी बनाने में असफल होता है लेकिन संघर्ष से चेतित आग को प्रज्वलित ही रखता है।

मतीन को-ऑपरेटिव सोसायटी बनाने की लड़ाई हार जाता है। अपनी युवावस्था

---

1. डॉ. शंकरदयाल शर्मा - मंजूषा, पृष्ठ - 60
2. वही, पृष्ठ - 61
3. अब्दुल बिस्मिल्लाह - झीनी झीनी बीनी चदरिया, पृष्ठ - 13
4. वही, पृष्ठ - 19
5. वही, पृष्ठ - 20

से लेकर बुढ़ापे तक शोषण के खिलाफ लड़ता रहता है। अलीमुन के कहने पर इकबाल पेटी बगल में दबाकर गोलघर की ओर निकल पड़ता है वह सेठ गजाधर प्रसाद को साड़ी बेचता है - ''सेठ गजाधर प्रसाद ने इकबाल को नकद पैसा देना स्वीकार कर लिया, पर कटौती के पच्चीस रुपये काटकर ! उसका दिमाग भन्ना उठा।''[1] इकबाल के मन में प्रश्न उठता है कि अब साड़ी किसे बेचनी है - ''सरकारी को-ऑपरेटिव की भी यही हालत है। किसी गिरस्ता की गद्दी पर जाना तो फिजूल है। हर जगह गिद्ध बैठे हैं। गद्दी-गद्दी पर, दूकान-दूकान पर।''[2] किसी न किसी कीमत पर इकबाल साड़ी बेच देता है। उसका ... ''रोम-रोम क्रोध और दु:ख से जलने लगा। उसके कदम तेज हो गए। इस कटौती के खिलाफ, इस पूरी साजीश के खिलाफ कुछ-न-कुछ करना ही होगा''[3]

इकबाल अपने बुनकर भाइयों को शोषण का एहसास करवाता है। ''पिछले दिनों यहाँ एक 'बुनकर कलोनी बनी है, लेकिन आपने कभी देखा वहाँ जाकर कि कौन रहता है वहाँ ? ... आपका माल को-ऑपरेटिव के जरिए क्यों नहीं खरीदा जाता ? क्या वजह है इसकी? आपको सोसाइटियों के जरिए आर.बी.आई का लोन क्यों नहीं मिल पाता ? आप 'शेयर कैपिटल' का फायदा क्यों नहीं ले पाते ? इसलिए की ये सब चीजे सरमायादारों की मुट्ठियों में बंद है।''[4] इसलिए साथियों अब वक्त आ गया है कि हम ''इस जुल्म के खिलाफ एकजुट होकर खड़े हों और अपनी लड़ाई जल्द से जल्द शुरु कर दें। ... खास तौर से मैं अपने नौजवान साथियों से इस बात के लिए पुरजोर अपील करता हूँ कि वे आगे आयें और इन्कलाब की रहबरी करें, क्यों कि इन्कलाब हमेशा नौजवानों के जोश से पैदा होता है।''[5] इकबाल स्वयं शोषण के खिलाफ संघर्ष के लिए उठता है और अपने अनपढ़ बुनकर बंधुओं को भी संघर्ष की अपील कर कर एकजुट होकर सभी शोषण के खिलाफ संघर्ष करते हैं।

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में संघर्ष - चेतना कम मात्रा में किंतु अवश्य परिलक्षित होती है। अली अहमद सोचता था कि रामवृक्ष पाण्डे से दस-पाँच रूपिया उधार माँगूँ लेकिन पैसे माँगने के पहले ही उसकी पीटाई होती है। अली अहमद की बाते सुनने पर ''मखदूम नाऊ इस तरह उछला जैसे बिच्छि काट ली हो। ई तुम का कह रहे हो। अरे का ऊ चमार-पासी

---

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह - झीनी झीनी बीनी चदरिया, पृष्ठ - 190
2. वही, पृष्ठ - 190
3. वही, पृष्ठ - 190
4. वही, पृष्ठ - 194
5. वही, पृष्ठ - 195

समझ लिए हैं ? ई बात तो अभी तक नाँही रही हमारे गाँव में। ई तो भाई बड़ी बेइज्जती की बात है। अल्ली, तुम तो रिपोट लिखा दो जाके घूरपुर।''[1] यहाँ हमें अली अहमद और मगदूम नाऊ में संघर्ष - चेतना दृष्टिगत होती है। अली का संघर्ष के लिए चेतित उठना स्वाभाविक था क्योंकि रामवृक्ष पाण्डे अपनी बेटी की शादी में न आने के कारण अली अहमद को बुरी तरह से पीटते हैं।

अली अहमद संघर्ष से चेतित उठकर अपनी रामकहानी पं. जवाहरलाल जी से कहना चाहता है - ''घर से निकलते समय अली अहमद के मन में जो चिनगारी जल रही थी, अब वह पूरी ज्वाला बन चुकी थी। अगर मिल गए जवाहरलालजी तो उस रामवृक्ष पाण्डे की खाट खड़ी करवा दूँगा।''[2] अली के रग - रग में संघर्ष की आग भड़क उठती है। वह हरदम जवाहरलालजी से मिलने का प्रयास करता है लेकिन जवाहरलाल जी, जो उस समय प्रधानमंत्री थे, नहीं मिल पाते। अली अहमद अंतिम निर्णय पर आ पहुँचता है। उसे वह प्रसंग याद आता है कि रामवृक्ष पाण्डे के मँझले बेटे ने फुल्ली दाई की नन्हीं सी नातिन की इज्जत लूटी थी। वह रनिया से कहता है इस गाँव में रहना ठीक नहीं है - ''हम बेइज्जती की जिंदगी नहीं जिएँगे।''[3] उसे डर इस बात का होता है कि फुल्ली दाई की नन्हीं सी नातिन पर लोगों की निगाहें बिगड़ती जा रही हैं। रनिया को तो गाँव-गाँव जाकर चुड़ियाँ पहननी पड़ती है। इसलिए वह गाँव छोड़कर चला जाना ठीक मानता है।

'समर शेष है' में प्रस्तुत संघर्ष - चेतना अत्यल्प मात्रा में दृष्टिगोचर होती है। उन दिनों कॉलेज में एक आंदोलन शुरु हुआ था और कथा-नायक की पूरी जिंदगी तो सतत संघर्ष में बीती आ रही थी। कथा-नायक स्वयं कहता है - ''वह अंग्रेजी विरोधी आंदोलन था और अंग्रेजी को छोड़कर दूसरा विषय लेना मेरे लिए बहुत कठिन था। फिर भी 'अंग्रेजी हटाओं' नामक उस आंदोलन में मैंने भी भाग लिया और जुलूस का नेतृत्व करके अंग्रेजी में लिखे गए साईनबोर्ड्स तोड़ने में मैंने भी योगदान किया।''[4] कथा-नायक अंग्रेजी के बदले में अर्थशास्त्र विषय लेता है। वह संघर्ष के लिए चेतित उठकर भाषण देता है - ''साथियों ! हमारे देश से अंग्रेज तो चले गए, पर अंग्रेजी नहीं गई। हम किसी कौम की गुलामी से भले ही मुक्त हो गए, पर भाषा के गुलाम अब तक बने हुए हैं।''[5] प्रस्तुत कथन से यह बात विदित होती है कि कथा-नायक तथा

---

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह - मुखडा क्या देखे, पृष्ठ - 34
2. वही, पृष्ठ - 38
3. वही, पृष्ठ - 43
4. अब्दुल बिस्मिल्लाह - समर शेष है, पृष्ठ - 87
5. वही, पृष्ठ - 87-88

युवकों में अंग्रेजी भाषा को हटाने के लिए संघर्ष - चेतना प्रस्फुटित हुई है। डॉ. देवराज पथिक का कथन यहाँ उल्लेखनीय सिद्ध होता है। वे कहते हैं - ''जवानी वही जवानी है जो लाख प्रकार के अवरोधों से टकराने का दृढ़ संकल्प लिए हो, झुकना जिसे पसन्द न हो, अटल अकम्प अड़े रहना जिसकी प्रवृत्ति हो। सचमुच वही जवानी जो बुढ़ापें में भी संजीवनी का काम करती है।''[1]

स्पष्ट है कि यहाँ विवेचित उपन्यासों में परिलक्षित युवा संघर्ष - चेतना भिन्न-भिन्न कारणों से प्रस्फुटित हुई है। 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' का नायक मतीन तथा उसके बेटे इकबाल और 'मुखड़ा क्या देखे' का नायक अली अहमद से लेकर 'समर शेष है' तक वे कथा-नायक में वह जवानी दिखाई देती है जो बुढ़ापे में संघर्ष की संजीवनी का काम करती है।

3.7.3 नारियों में संघर्ष-चेतना :-

नारी समाज का अविभाज्य घटक है। लेकिन समाज स्त्री को हमेशा एक निर्जीव वस्तु के रूप में मानता चला आया है। डॉ. सौ. देसाई ने लिखा है - ''मूल्याधिकार के लिए उसे निरंतर संघर्ष करना पड़ा है।''[2] लेकिन आज नारी की स्थिति में परिवर्तन दृष्टिगोचर होता है। आज नारियों में संघर्ष के खिलाफ चेतना जाग उठी हुई है। वह अन्याय, अत्याचार तथा शोषण के खिलाफ संघर्ष करने में तत्पर दिखाई देती है।

विवेच्य उपन्यासों में प्रस्तुत नारियों में भी संघर्ष -चेतना पर्याप्त मात्रा में मिलती है। 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया का उदाहरण यहाँ द्रष्टव्य है। मतीन ने अन्याय तथा शोषण के खिलाफ गिरस्ताओं के साथ लंबी लड़ाई लड़ी। इस लड़ाई को अलीमुन देखती रही और मतीन की इस लड़ाई के कारण अलीमुन को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। गिरस्ता लोगों के खिलाफ लड़ी लड़ाई मतीन हारता है। इससे अलीमुन में संघर्ष - चेतना जाग उठती है और, कहने लगती है - ''बचपन से ही तो दुख झेल रहे हैं। जो भी सपना देखा पूरा नहीं हुआ। ... नास हो ऐसे गिरस्ता का ! पूरे खानदान के लिए मुनाकिर-नकीर आवैं। बिला जायँ हरमिये सब।''[3] अलीमुन संघर्ष से चेतित उठकर हाजी अमीरूल्ला की सात पीढ़ियों के बुरे कृत्य का उद्धार करके पछताती है और मन ही मन सोच विचार करके खामोश रहती है।

---

1. डॉ. देवराज पथिक - नयी कविता में राष्ट्रीय चेतना, पृष्ठ - 324-325
2. डॉ. सौ. जे.एम. देसाई - आधुनिक हिंदी काव्य में नारी, पृष्ठ - 1
3. अब्दुल बिस्मिल्लाह - झीनी झीनी बीनी चदरिया, पृष्ठ - 108

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR LIBRARY

दुर्गापूजा और मुहर्रम के दंगों के समय नारियाँ अपनी संघर्षमयी भूमिका निभाती हुई दृष्टिगोचर होती हैं। बनारस में कर्फ्यू लगने के समय सब लोग अपने-अपने घरों में पड़े रहते है और औरतों को आदेश दिया जाता है कि वे फौरन मिर्चा पीसकर उसका बुक्का तयार करें, ताकि शत्रुओं की आँखों में उसे झोंका जा सके।''[1] प्रस्तुत उद्धरण से बात साफ स्पष्ट है कि सांप्रदायिक दंगों के समय स्त्रियाँ भी संघर्ष से चेतित होकर शत्रु पर टूट पड़ती थीं। यदि वे इस तरीके को न अपनाती तो शत्रुओं द्वारा बेइज्जती की संभावना बनी रहती। आज की औरत में तो संघर्ष - चेतना के अलगही रूप दिखाई देते हैं।

'मुखड़ा क्या देखे' में प्रस्तुत संघर्ष का चित्रण कम मात्रा में मिलता है।. पं. रामवृक्ष पाण्डे से अली अहमद को पीटने पर रनिया का दिमाख भन्ना उठता है। वह क्रोध में आकर कहने लगती है - ''यह तो सरासर जुल्म है क्या आजादी का यही मतलब होता है ? पहले तो ये कहा जाता था कि अंग्रेज सरकार बहुत जालिम है, अपना राज आ जाने पर सारा जोर - जुलुम खत्म हो जाएगा। यही पंडितजी बताया करते थे सबको। तो क्या वह सब झूठ था? ''[2] संघर्ष से प्रेरित होकर रनिया कह रही थी । आजादी का मतलब अक्सर क्या है ? देश के स्वाधीनता के पहले अंग्रेजी राज था। लेकिन अंग्रेजी राज में भी उतना शोषण नहीं हुआ था जितना देश के आजाद हो जाने के बाद हुआ। अली अहमद को बिना वजह मार-पीट होती रहती। पं. रामवृक्ष पाण्डे की नीति अंग्रेजी सरकार से भी बदतर थी। अली अहमद पर अन्याय होने पर रनिया संघर्ष से चेतित होकर उक्त कथन कहती है।

पं. रामवृक्ष पाण्डे द्वारा अली अहमद को पीटने से और उन्हीं के मँझले बेटे द्वारा फुल्ली दाई की नातिन की इज्जत लूटी जाने के कारण अली अहमद गाँव की इस हालत को देखकर गाँव छोड़कर जाना चाहता है। वह बेइज्जती की जिंदगी नहीं जिना चाहता। इसलिए अली अहमद गाँव छोड़ने की बात रनिया से कहता है तो रनिया कहने लगती है - ''क्या चीलर के डर से कोई अपनी कथरी छोड़ देगा ? तुम जाके थाने में रपट काहे नहीं लिखाते।''[3] रनिया निडरता के साथ अली को समझाने का प्रयास करती है । रनिया यह सलाह उसी वक्त देना चाहती थी जिस वक्त रामवृक्ष पाण्डे ने अली अहमद को मारा था। प्रस्तुत उद्धरण से हमें रनिया में स्थित संघर्ष-चेतना दृष्टिगोचर होती है।

---

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह - झीनी झीनी बीनी चदरिया, पृष्ठ - 165
2. अब्दुल बिस्मिल्लाह - मुखड़ा क्या देखे, पृष्ठ - 31
3. वही, पृष्ठ - 43-44

धर्म परिवर्तन की बात को लेकर भी रनिया में संघर्ष-चेतना प्रस्फुटित हुई है। वह कहती है - ''आग लगे उनके बिलायत को। एकठे तो लड़का है, उसे मैं आँख से दूर होने दूँगी? रनिया जल उठी।''[1] पतरस भाई ईसाई था। उसने अली अहमद से कहा था कि ईसाई हो जाओ। ईसाई हो जाने से तुम्हारे सारे दुख दूर हो जायेंगे। अली अहमद पतरस भाई ने कही बात को रनिया के सम्मुख प्रस्तुत करने लगता है। उसने कहा था कि ईसाई धर्म में परिवर्तन हो जाने पर बुद्धू को बिलायत भेजा जाएगा। लेकिन धर्म परिवर्तन की बात सुनते ही रनिया को बहुतही गुस्सा आता है। रनिया को बहुत समझाया जाता है कि बुद्धू बिलायत से पढ़-लिखकर वापस लौटने पर बड़ा साहब बनेगा। लेकिन रनिया धर्म परिवर्तन के विरोधी थी। प्रस्तुत उद्धरण से हमें पता चलता है कि रनिया में धर्म परिवर्तन के कारण संघर्ष-चेतना जाग उठती है।

'जहरबाद' में संघर्ष-चेतना का चित्रण कम मात्रा में क्यों न हो किंतु अवश्य प्राप्त होता है। कथा-नायक अम्माँ की संघर्षशील वृत्ति का परिचय इस प्रकार देता है - ''उस दिन अम्माँ एकदम शेरनी की तरह खडी हो गयीं और बाहर निकलकर उन्होंने भी एक पत्थर उठा लिया। - तुम आगे बढ़े नहीं कि मैंने मारा नहीं। बुढ़ऊ, तुम्हारा कपार न फोड़ दूँ तो कहना कोई पठान की बच्ची रही ...।''[2] नारियों में भी पति के अन्याय-अत्याचार तथा शोषण को सहने की कोई सिमाएँ होती हैं। अम्माँ और अब्बा में अक्सर झगड़े होते थे। इनके झगड़े के मूल में आर्थिक विपन्नता दृष्टिगोचर होती है। अब्बा अम्माँ को हरदम गालियाँ देते थे। मारपीट करते हैं। लेकिन एक दिन अम्माँ क्रोध में आती है और अब्बा को समझाने का प्रयास करती है। अगर नारी है तो क्या आजीवन पुरूष की दासता में रही जाएँ। उसके रग-रग में संघर्ष की आग भड़क उठती है और शेरनी की तरह खड़ी होकर पत्थर उठाती है। अम्माँ का पत्थर उठाना कोई कम महत्त्वपूर्ण बात नहीं है। इसमें अम्माँ में जगी संघर्ष - चेतना दृष्टिगत होती है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि नारी को सतत संघर्ष करना पड़ा है। 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' और 'मुखड़ा क्या देखे' में चित्रित नारी में साहस का भाव परिलक्षित होने के कारण ही संघर्ष-चेतना अत्यधिक मुखर हो उठी है। वह अन्याय, जुल्म के प्रति चेतित हो उठती है। 'जहरबाद' की नारी आपसी संघर्ष के कारण चेतित उठती हुई दिखाई देती है।

---

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह - मुखड़ा क्या देखे, पृष्ठ - 62
2. अब्दुल बिस्मिल्लाह - जहरबाद, पृष्ठ - 69

SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR LIBRARY

3.7.4 एक ही धर्म के दो पंथियों में संघर्ष-चेतना :-

पशु-पक्षी जैसे दूसरे पशु-पक्षियों को अपना हितैषी समझते हैं उसी प्रकार एक मुसलमान सहजही दूसरे मुसलमान को अपना शुभाकांक्षी मान लेता है। लेकिन आजकल स्थिति इसके विपरीत हो चुकी है। आज हमें एक ही धर्म के दो पंथियों-शिया और सुनी में संघर्ष-चेतना प्रस्फुटित हुई दृष्टिगोचर होती है। दोनों पंथ मुस्लिम धर्म के ही अनुयायी हैं। डॉ. विजयदेव झारी के मतानुसार शिया और सुन्नी संप्रदाय की शत्रुता का मुख्य कारण - ''मुहम्मद साहब की मृत्यू के पश्चात इस्लाम धर्म की खलाफत के सरदार हजरत अली को न बनाकर हजरत अबुबक्र बनाए गए। इनके पश्चात हजर उमर तथा फिर हजरत उसमान और चौथे खलीफा हजरत अली हुए। इसके कारण खलाफत की गद्दी के उत्तराधिकारी के लिए विवाद उठ खड़ा हुआ। एक ओर हजरत अली के पुत्र हजरत इमाम हुसेन को खलीफा बनाया गया तो दूसरी ओर याजीद को खलीफा बनाया गया। कहते हैं की हजरत इमाम हुसैन जब मदीने से कूफा जा रहे थे तो तत्कालीन खलीफा यजीद ने उनकी कर्बला नामक स्थान पर हत्या कर दी। इस घटना के बाद... शिया और सुन्नी में घोर शत्रुता आ गई।''[1]

अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'झीनी झीनी बीनी चदरिया' में प्रस्तुत संघर्ष-चेतना का चित्रण कम मात्रा में क्यों न हो लेकिन अवश्य मिलता है। 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' में विवेच्य संघर्ष-चेतना को इस प्रकार प्रस्तुत किया है - ''एक समुदाय सुन्नी है और दूसरा शिया। पहले इनकी एक निजी मस्जिद थी दोसीपुरा में और एक कब्रस्तान ! शिया-सुन्नी का खानदानी विभाजन हो जाने के बाद भी इन सार्वजनिक स्थानों को लेकर कुछ दिनों तक कोई झगड़ा नहीं रहा, लेकिन धीरे-धीरे बनारस शहर में जब जमीन की कीमत बढ़ती गयी तो दरार पैदा होने लगी और इस बात पर आपत्ति उठने लगी कि मस्जिदवाली कोठरी में ताजिया क्यों रखा जाता है ? इसी तरह कब्रस्तान को लेकर भी आपत्तियाँ उठीं।''[2] आपत्तियाँ कब्रस्तान और मस्जिदवाली कोठरी में ताजिया के रखने के कारण थीं। वास्तविक उस कब्रस्तान में शियों का एक इमामबाड़ा है और सुन्नियों की तीन प्रमुख कब्रें। शियाओं का मानना है कि इमामबाडे में तो नौहा मातम होता है और उधर कब्रों पर दिये जलाये जाते हैं, चादरें चढ़ायी जाती है और कव्वालियाँ गायी

---

1. डॉ. विजयदेव झारी - हिंदी कहानी में मुस्लिम जीवन और संस्कृति, पृष्ठ - 29
2. अब्दुल बिस्मिल्लाह - झीनी झीनी बीनी चदरिया, पृष्ठ - 182

जाती हैं। इस पर एतराज हुआ कि गम के साथ खुशी नहीं मनायी जा सकती। प्रस्तुत कथन से स्पष्ट हो जाता है कि एक ही धर्मावलंबियों में एक साथ संघर्ष की आग भड़क उठने के पीछे का मूल कारण बनारस में जमीन की कीमत बढ़ना है। जमीनों की कीमत बढ़ने के कारण इनमें संघर्ष-चेतना जागी हुई परिलक्षित होती है।

3.7.5 जमींदारों में संघर्ष-चेतना :-

अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में संघर्ष-चेतना का चित्रण कम मात्रा में क्यों न हो किंतु अवश्य मिलता है। पं. रामवृक्ष पाण्डे का कथन दृष्टव्य है - ''इस शुभ अवसर पर हलवाई आया, कोंहार आया, चमार और पासी आए, सिपाही नाऊ भी आया, मगर अली चुड़िहार क्यों नहीं आया ? जरुर उस मुसल्ले का दिमाग खराब हो गया। अब बन न गया पाकिस्तान हिंदुस्तान में जगह न मिली तो पाकिस्तान चले जाएँगे। वरना एक प्रजा की यह मजाल, कि गाँव के प्रतिष्ठित बहमण की कन्या का शुभ विवाह हो और वह अनुपस्थित रहे। वाह रे गाँधी बाबा, खुब आजादी दिलाई है तुमने ...।''[1] पं. रामवृक्ष पाण्डे एक बड़े जमीनदार थे। आजादी के बाद उनकी जमीनदारी खत्म हो चुकी थी। उनकी जमीन का कुछ हिस्सा ललमुँहे के बंदरों में गया था। इसलिए वे गांधीजी के प्रति भी क्रोध व्यक्त करते हैं। अली अहमद बेचारा अपनी कुछ मजबुरी के कारण इनकी बेटी की शादी में अनुपस्थित रहता हैं। पं. रामवृक्ष पाण्डे को अहं इस बात का है कि पूरी जनता शादी में आती है और अली अहमद नहीं आता है। इन्हीं कारणों से पं. रामवृक्ष पाण्डे में संघर्ष -चेतना जाग उठती है और वे अली चुड़िहार को मार-पीट भी करते हैं।

3.7.6 पर्दा प्रथा से संबंधित संघर्ष-चेतना :-

शिक्षित मुस्लिम समाज में परंपरागत पर्दे की प्रथा का हटना तो स्वाभाविक है लेकिन 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' में अनपढ़ो में संघर्ष - चेतना परिलक्षित होती है। मतीन अलीमुन तथा नजबुनिया से कहता है - ''अरे आ जा, कोई नहिंने, अपने भोला है। 'वह एक

---

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह - मुखड़ा क्या देखे, पृष्ठ - 18

झटके में अपनी पूरी परंपरा को तोड़ देना चाहता है, लेकिन नजबुनिया नहीं आती।''[1] प्रस्तुत कथन से स्पष्ट है कि मतीन पर्दे की परंपरा को बचपन से देखता आ रहा है। उसे मालूम था कि उसकी माँ भी कभी पर्दा करती थी। लेकिन मतीन भी कोई खासा पढ़ा लिखा नहीं। फिर भी उसे यह पर्दा प्रथा पसंद नहीं है। भोला के घर आने पर अपनी भऊजी नजबुनिया से वह पर्दे की परंपरा तोड़ने के लिए कहता है लेकिन वह मतीन की बात नहीं मानती। यहाँ हमें मतीन में पर्दा प्रथा के प्रति संघर्ष-चेतना जागी हुई दृष्टिगत होती है।

3.7.7 अन्याय के विरूद्ध संघर्ष-चेतना :-

अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' में इसका चित्रण मिलता है। उपन्यास का नायक मतीन में संघर्ष-चेतना परिलक्षित होती है। मतीन को मालूम था कि गिरसों द्वारा शुरु हुआ कटौती का चक्र इलेक्शन के बाद से ही शुरु हुआ था। उसे सोसायटीवाला प्रसंग याद आता है वह संघर्ष से उत्साहित होकर कहने लगता है - ''वह लड़ाई वहीं नहीं खतम हो गयी थी। और लड़ाई का सिर्फ वही एक पहलू नहीं था। यहाँ तो कदम-कदम पर अन्याय है और कदम-कदम पर लड़ाई है ...।''[2] मतीन का उपरोक्त कथन सुनकर अन्य बुनकर भी संघर्ष से चेतित उठते हैं - ''इ कटौती के खिलाफ भी हम लड़ेंन। मगर पहले सब एक हो जाव। अब इ सब बरदास से बाहर हो गोवा है।''[3] इस कथन से विदित होता है कि अन्याय-अत्याचार को सहने में भी कुछ सहनशीलता होती है। बुनकर अब अन्याय सहने के पक्ष में नहीं बल्कि अन्याय के खिलाफ संघर्ष के लिए चेतित हो उठे हैं।

3.7.8 किसानों में संघर्ष-चेतना :-

किसानों में पनपती जा रही संघर्ष-चेतना 'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास में दृष्टिगोचर होती है। बुद्धू और बवाली में महँगाई के कारण बात छीड़ जाती है। बुद्धू महँगाई के बढ़ते प्रभाव के कारणों को बवाली से प्रश्न करता है - ''बड़ी महँगाई है ... क्या किया जाय ? बवाली कहता है वो तो रहेगी। जब तक जमींदारन अउर पूँजीपतवन का नास नहीं होगा, खुसहाली नहीं आएगी।''[4] बवाली की बात सुनने पर बुद्धू आगे कहता है कि इसका नाश कैसा होगा। बवाली

---

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह - झीनी झीनी बीनी चदरिया, पृष्ठ - 158
2. वही, पृष्ठ - 181
3. वही, पृष्ठ - 181
4. अब्दुल बिस्मिल्लाह - मुखड़ा क्या देखे, पृष्ठ - 183

MAR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY KOLHAPUR

उत्तर देता है - ''सशस्त्र क्रांति से। माओ का कहना है कि क्रांति बंदूक की नली से आती है। ... क्रांति का होना बहुत जरुरी है।''[1] बवाली के उक्त कथन से स्पष्ट हो जाता है कि पं. रामवृक्ष पाण्डे जमीनदार होने के कारण किसानों से लगान वसूल करते थे। बवाली की कोई खेतीबाड़ी नहीं है लेकिन किसानों का प्रतिनिधि बनकर वह किसानों को जमीनदारों के प्रति संघर्ष के खिलाफ प्रोत्साहित करने का भरसक प्रयास करता है। पूरे बलापुर के किसान जमीनदारी प्रथा से तथा उनके अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने के लिए चेतित हो उठते हैं।

3.7.9 मानसिक संघर्ष-चेतना :-

मानसिक संघर्ष - चेतना का चित्रण विवेच्य उपन्यासों में पर्याप्त मात्रा में दृष्टिगोचर होता है। अब्दुल बिस्मिल्लाह के 'समर शेष है' में प्रस्तुत संघर्ष का चित्रण अत्यधिक मात्रा में मिलता है। कथा-नायक विभिन्न प्रकार के अनुभवों से गुजरने के बाद स्वयं मन ही मन कहता है - ''भाग्य जिसे कहते हैं, वह यही है और खुदा जिसे कहते हैं वह बस यही कर सकता है। अब आदमी के भीतर दम हो तो लड़े इनसे।''[2] कथा-नायक के अब्बा कथा-नायक की पढ़ाई-लिखाई का बोझ नजीर पर सौंपते हैं लेकिन जब कथा-नायक से मजुरी करायी जाती है तब कथा-नायक मानसिक संघर्ष से चेतित उठकर उक्त कथन कहता है। कथा-नायक का जीवन गेंद बन जाता है। उसके मुख से निकले वाक्य हैं - ''मुझे लगा संसार पत्थर से भी कठोर और मृत्यू से अधिक निर्मम है। जीवन, विषम भिन्न के सवाल की भाँति जटिल और जल्लाद की भाँति क्रूर है। प्रकृति की सुंदरता एक मजेदार छल से अधिक नहीं है ... मुझे अब क्या करना चाहिए ? यह एक ऐसा प्रश्न था जिसके कई उत्तर निकाले जा सकते थे। लेकिन वे सारे उत्तर भी प्रश्नसूचक ही थे। जैसे, क्या मुझे आत्महत्या कर लेनी चाहिए ?''[3] इस उद्धरण से कथा-नायक के मन में उत्पन्न संघर्ष-चेतना का पता अपने आप हो जाता है।

'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' में भी इस प्रकार के संघर्ष का चित्रण प्रचुर मात्रा में विद्यमान है। लेखक मतीन के मानसिक संघर्ष का चित्रण इस प्रकार करते हैं - ''विचार ही विचार है, बादलों की तरह उमड़-धुमड़ रहे हैं उसके दिमाग में। सवाल ही सवाल है, आँधियों

---

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह - मुखड़ा क्या देखे, पृष्ठ - 183
2. अब्दुल बिस्मिल्लाह - समर शेष है, पृष्ठ - 16
3. वही, पृष्ठ - 34-35

की तरह उफन रहे हैं उसके दिमाग में।''[1] इन विचारों के साथ-साथ उसके मन में भी संघर्ष-चेतना जाग उठती है - ''सरकार ने बुनकरों के लिए काफी सहूलियते दे रखी है अब तो। शेयर कैपिटल है, आर.बी.आई. है, कहीं से भी लोन ले सकता है। लोन लेकर अपना निजी धन्धा शुरु कर सकता है।''[2] मतीन हरदम बुनकरों के लिए संघर्षरत दिखाई देता है।

मतीन को अलीमुन से पता चलता है कि बशीर की बीवी रेहनवा का देहान्त हुआ है। वह तुरंत उस स्थान पर जाता है जहाँ लाश के लिए आवश्यक सामग्री का नियोजन किया जा रहा था। मतीन का दिमाग भन्ना उठता है और वह सोचता है कि ''जिंदगी में आदमी की कितीन- कितनी जरुरतें हुआ करती हैं कि उन्हें वह आजीवन पूरा नहीं कर पाता, जबकि मर जाने पर वे जरुरतें किस कदर सिमट जाती हैं। बस थोड़ासा कपड़ा, एक शीशी केवड़ा जल, थोड़ी-सी मुल्तानी मिट्टी, एक पैकेट अगरबत्ती और थोड़ा-सा कपूर। कुल मिलाकर एक लाश के लिए बस इतनीसी चीजों की जरुरत होती है। बस ! यह भी न मिले तो क्या ? लाश भला क्या शिकायत करेगी बेचारी ? यहाँ आदमी की तमाम जरुरतों का खात्मा हो जाता है।''[3] बशीर की पत्नी रेहनवा की मृत्यु के बाद मतीन बशीर की दयनीय अवस्था को देखकर मन ही मन अपनी संघर्ष - चेतना को उजागर करता है। मतीन के दिमाग में बवंडर सी स्थिति पैदा हो जाती है। वह-मन-ही-मन सोचता है कि दयनीयता की भी कुछ सिमाएँ होती हैं। इतनी दयनीय स्थिति में जिना भी सही नहीं है। बशीर जैसा आदमी बीवी के मरने के उपरान्त लाश की आवश्यकताओं की पूर्ति भी नहीं कर पाता।

'मुखड़ा क्या देखे' उपन्यास के पंडित रामवृक्ष पाण्डे में मानसिक संघर्ष-चेतना दृष्टिगोचर होती है। स्वदेशी शासन के संदर्भ में वे कहते हैं - ''भारतवर्ष भिन्न-भिन्न जातियों का देश भलें हैं, पर मूलत: यह हिंदू देश है। इसलिए सभी धर्मावलंबियों को समान नहीं माना जा सकता। नेहरू के संविधान में तो सबकी हिस्सेदारी बराबर-बराबर है। कल को कोई टंटा खड़ा हुआ तो उसका भुगदंड़ कौन भोगेगा ? क्या नेहरू आएँगे भोगने ? भोगेगा तो हमारा समाज ही न ...।''[4] पं. रामवृक्ष पाण्डे चेतित होकर कहते हैं कि सभी धर्मों के लोगों को समान नहीं मानना चाहिए। प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरु ने सब धर्मावलंबियों की जनता को समान अधिकार दिए थे। इसलिए पं. रामवृक्ष पाण्डे उनके खिलाफ मानसिक संघर्ष से चेतित होते हैं।

---

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह - झीनी झीनी बीनी चदरिया, पृष्ठ - 17-18
2. वही, पृष्ठ - 18
3. वही, पृष्ठ - 146
4. अब्दुल बिस्मिल्लाह - मुखड़ा क्या देखे, पृष्ठ - 27

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY KOLHAPUR

उपन्यास का नायक अली अहमद में भी मानसिक संघर्ष-चेतना विद्यमान है। वह स्वयं कहता है - ''क्या - क्या सोचें ? परिवार के बारे में सोचें, रोजगार के बारे में सोचें, कि गाँव - जवार के बारे में सोचें ? कुछ भी सोचने का कोई फायदा नहीं... अली का सोचना जारी है ... इस बलापुर गाँव को समझना भी भई बड़ा मुश्किल है। ऐसा गाँव तो तीनों लोक में कहीं न होगा। जिसे शरीफ समझो, वह बदमाश निकलता है। जिसे ईमानदार समझों, बेईमान।''[1] पंडित रामवृक्ष पाण्डे से जब अली अहमद पर अन्याय - अत्याचार होता है तब वह अपनी रामकहानी मौलवी साहब से कहने जाता है लेकिन वे भी वैसाही व्यवहार करते दिखाई देते हैं। उस समय उपरोक्त पंक्तियाँ अली के मुख से अपने आप निकल पड़ती हैं।

3.7.10 पिता के प्रति पुत्र में संघर्ष-चेतना :-

प्रस्तुत संघर्ष-चेतना का चित्रण 'जहरबाद' में दृष्टिगत होता है। कथा-नायक का स्वयं का कहना है - ''अब्बा के प्रति मेरे मन में लगभग घृणा का भाव स्थापित हो गया था ... मैं पढ़ाई में इसलिए कमजोर हूँ कि मेरे घर में हमेशा कलह मचा रहता है और कलह सिर्फ अब्बा के कारण होता है। अत: मन ही मन मैं अब्बा को गालियाँ दे रहा था और मना रहा था कि वे शीघ्र ही मर जाएँ। मैं सोच रहा था कि यदि वे आजही मर जाएँ तो कल से मेरी जिंदगी में निश्चित रूप से चैन आ जाएगा।''[2] इस कथन से स्पष्ट होता है कि अब्बा के प्रति कथा-नायक के मन में उत्पन्न होनेवाली संघर्ष - चेतना का मुख्य कारण पारिवारिक है। अब्बा और अम्माँ में बार-बार झगड़े होते थे। झगड़ों का होना स्वाभाविक था। अम्माँ काम करती थी और अब्बा बिना काम किए हुए निश्चिंत रहकर किसी न किसी कारणों को लेकर अम्माँ की पीटाई करते थे। अब्बा की मार-पीट को सहने में अम्माँ असमर्थ होकर घर छोड़ चली जाती है। उस समय कथा-नायक के मन में अब्बा के प्रति खीज निर्माण होती है और वह संघर्ष से चेतित होता है।

इससे स्पष्ट है कि कथा-नायक के संघर्ष-चेतना की जड़ पारिवारिक आर्थिक स्थिती ही रही है।

---

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह - मुखड़ा क्या देखे, पृष्ठ - 133
2. अब्दुल बिस्मिल्लाह - जहरबाद, पृष्ठ - 90-91

3.7.11 विद्यार्थियों में संघर्ष-चेतना :-

प्रस्तुत संघर्ष-चेतना का चित्रण 'झीनी-झीनी बीनी चदरिया' में मिलता है। कुछ समय पहले शरफुद्दीन 'स्टुडेण्टस युनियन' के कार्यक्रमों में सहभागी होता था लेकिन ''शरफुद्दीन आज यूनिवर्सिटी नहीं गया है। स्टूडेण्ट्स यूनियन ने एडमीशन के मामले को लेकर कल वी.सी. के बंगले पर प्रदर्शन किया था और कैम्पस का माहौल तनावपूर्ण हो गया था।''[1] इससे इस बात के स्पष्ट संकेत मिलते हैं कि जरुर एडमीशन को लेकर यूनिवर्सिटी में भ्रष्टाचार हुआ था। अत: इस भ्रष्टाचार के खिलाफ विद्यार्थियों में संघर्ष-चेतना जाग उठती है और सब मिलकर वी.सी. के बंगले पर आंदोलन करते हैं जिससे कैम्पस का वातावरण तनावपूर्ण बना जाता है। प्रस्तुत कथन से लेखक आज की शिक्षा व्यवस्था पर संवेदनशीलता से आक्षेप उठाते हैं जो सही है।

उपन्यास की अंतिम पंक्तियों में छात्रों की वास्तविक संघर्ष-चेतना का परिचय मिलता है। इंटर में पढ़नेवाला एक छात्र अन्याय, अत्याचार और शोषण को सहने के बाद जोर-जोर से पढ़ने लगता है -

''सन्तो आयी ग्यान की आँधी रे
भ्रम की टाटी सबै उड़ानी माया रहै न बाँधी रे ...''[2]

बुनकरों की नयी पीढ़ी शोषण को सहने के लिए तैयार नहीं है। नयी पीढ़ी के विद्यार्थी चाहते हैं कि हम बुनकर हमारे समाज में प्रचलित रूढ़ि एवं परंपरा तथा किसी गिरस कोठिवालों के बंधन में नहीं रहेंगे। जब तक बुनकर समाज के बहुतसे सदस्य अनपढ़ थे। तब तो बात ठीक थी लेकिन नए दम के छात्र संघर्ष-चेतना से प्रेरित हो उठते हैं और भ्रम, प्रथा, अन्याय और शोषण के खिलाफ संघर्ष करते हैं।

निष्कर्ष :-

प्रस्तुत अध्याय के विवेचन-विश्लेषण के पश्चात निष्कर्ष रूप में जो तथ्य सामने आते हैं वे इस प्रकार हैं -

---

1. अब्दुल बिस्मिल्लाह - झीनी झीनी बीनी चदरिया, पृष्ठ - 82
2. वही, पृष्ठ - 208

1. विभिन्न विद्वानों द्वारा 'संघर्ष' और 'चेतना' शब्दों के अलग-अलग अर्थ तथा परिभाषाएँ दी गई हैं। विवेचन-विश्लेषण के पश्चात स्पष्ट होता है कि संघर्ष-चेतना से अभिप्राय है सर्वहारा वर्ग द्वारा शोषकों के खिलाफ उठायी गयी आवाज से है। साथ ही संघर्ष-चेतना का स्वरूप व्यापक एवं विस्तारित है।
2. अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यासों में संघर्ष-चेतना का चित्रण पर्याप्त मात्रा में मिलता है।
3. विवेचित उपन्यासों में मजदूरों की संघर्ष-चेतना प्रबल रही है। इसका प्रमुख कारण गिरस, कोठीवाल, मिल-मालिक आदि रहे हैं।
4. अब्दुल बिस्मिल्लाह ने युवा पीढ़ी में स्थित संघर्ष-चेतना को उजागर किया है। युवाओं का संघर्ष विभिन्न धरातलों पर मिलता है।
5. हम नारी को अबला कहते हैं लेकिन लेखक ने यह दिखाया है कि नारियों में भी संघर्ष करने की चेतना कितनी प्रबल है । नारी की संघर्ष चेतना का मुख्य लक्ष्य शोषण तथा अन्याय के खिलाफ है।
6. शिया और सुन्नी संप्रदाय में भी संघर्ष-चेतना के स्वर परिलक्षित हुए हैं। इनका विवाद कब्रस्तान को लेकर है।
7. विवेच्य उपन्यासों में पर्दा-प्रथा के बंधन को तोड़ दिया है।
8. विवेच्य उपन्यासों में जमींदारो में और किसानों में भी संघर्ष-चेतना के उदाहरण मिलते हैं।
9. विवेच्य उपन्यासों में मानसिक संघर्ष-चेतना पर्याप्त मात्रा में मिलती है। इसके भिन्न-भिन्न कारण मिलते हैं।
10. साथ-साथ इन उपन्यासों में पिता के प्रति पुत्र में भी संघर्ष-चेतना जाग उठी दिखाई देती है। इस संघर्ष का मूल 'अर्थ' है।
11. लेखक ने विवेच्य उपन्यासों में छात्रों में प्राप्त संघर्ष चेतना को उजागर कर आज की भ्रष्ट शिक्षा व्यवस्था पर प्रहार किया है।

❑❑❑❑